|| श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणे श्री नारायण दिग्बन्धन स्तोत्र ||

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे ।
प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवः तथोत्तरे ॥ १॥

ऐशान्यां रक्षताद्विष्णुः आग्नेय्यां च जनार्दनः ।
नैऋत्यां पद्मनाभस्तु वायव्यां मधुसूदनः ॥ २॥

ऊर्ध्वं गोवर्धनोद्धर्ताः अधरायां त्रिविक्रमः ।
एताभ्यो दशदिग्भ्यश्च सर्वतः पातु केशवः ॥ ३॥

एवं कृत्वा तु दिग्बन्धं विष्णुं सर्वत्र संस्मरेत् ।
अव्यग्रचित्तः कुर्वीत न्यासकर्मं यथाविधि ॥ ४॥

इति श्रीविष्णुधर्मोत्तरपुराणे दिग्बन्धनं सम्पूर्णम् ।

विधान : भगवान नारायण के नाम मन्त्रों से सम्बध्द यह श्री नारायण दिग्बन्धन स्तोत्र है, जो लाल रंग में लिखा हुआ है ! किसी भी सात्विक उपासना में इस दिग्बन्धन स्तोत्र से दशों दिशाओं का बंधन करके ही साधना – उपासना आरम्भ करनी चाहिए ! इस स्तोत्र में दश दिशाओं के नाम दिए है ! उन दिशाओं के नाम का उच्चारण होते ही उस दिशा में जल अथवा अक्षत अथवा पिली सरसों फेंकना चाहिए ! जैसे 'पूर्वे नारायणः पातु' ऐसा बोलकर पूर्व दिशा की ओर जल अथवा अक्षत अथवा पिली सरसों फेंकें ! ऐसा ही अन्य दिशाओं के लिए भी करें !

अधिक जानकारी के लिए चैनल देखें : https://www.youtube.com/watch?v=S-xCUZIed64

- **स्वामी रुपेश्वरानंद** (+91-7607 233 230) https://swamirupeshwaranand.in/